Prof. Khushbu Kumari
Guest Teacher
Dept. of Political science
V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani, Lnmu

Class - B.A. 3(H)
Paper - VI

Topic - मॉर्गेन्थो का यथार्थवादी सिद्धांत

Lecture - 2

तीसरा सिद्धांत

हित सदैव परिवर्तनीय है — राजनीतिक यथार्थवाद यह मानता है कि राष्ट्रीय हित ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का सार है, परन्तु फिर भी राजनीतिक यथार्थवाद शक्ति पर आधारित राष्ट्रीय हित के विचार को किसी शाश्वत अथवा सदैव के लिए निश्चित दृष्टिकोण से नहीं बांधता।

मॉर्गेन्थो का मत है कि परिस्थितियाँ उन राष्ट्रीय हितों को प्रभावित करती हैं जिनके आधार पर राजनीतिक निर्णय लिये जाते हैं। अतः बदलती हुई परिस्थितियों के सन्दर्भ में राष्ट्रीय हित का विचार करके तदुपरान्त शक्ति पर जोर दिया जाना चाहिए। राष्ट्रीय हित का विचार वास्तव में राजनीति का एक गूढ़ तत्व है जिस पर परिस्थितियों, स्थान और समय का कोई प्रभाव नहीं पड़ता फिर भी इतिहास के किसी भी विशेष काल में राजनीतिक कार्यों को निश्चयात्मक रूप देने वाला उन राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रकरणों पर आधारित रहता है जिनके मध्य विदेश नीति का निर्माण होता है।

राजनीति का महत्वपूर्ण तत्व सुरक्षा में निहित है। यह सुरक्षा ही वह

अपरिवर्तनीय हित है जो कभी नहीं बदलता, किन्तु इस हित को साकार करने के साधनों और उससे सम्बन्धित हितों पर राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है तथा उनका स्वरूप परिस्थितियों के अनुसार बदलता है।

चौथा सिद्धान्त —
अमूर्त नैतिक नियम राजनीति पर लागू नहीं किये जा सकते — राजनीतिक यथार्थवादी नैतिक नियमों के महत्व को मानता है परन्तु उसका यह दृढ़ विश्वास है कि सर्वमान्य स्वरूप के रूप में उन्हें राज्य कार्यों पर लागू नहीं किया जा सकता। उन्हें समय और स्थान की ठोस परिस्थितियों की कसौटी पर कसा जाना चाहिए और परिस्थितियों के अनुकूल उसका चयन करना चाहिए। यथार्थवाद की मान्यता है कि राष्ट्रों के नैतिक सिद्धान्तों का पालन विवेक और सम्भावित परिणामों के आधार पर करना चाहिए। बिना विवेक के राजनीतिक नैतिकता का कोई अर्थ नहीं है।

पाँचवाँ सिद्धान्त —
विश्व एवं राष्ट्र के सामान्य नैतिक नियम भिन्न-भिन्न — राजनीतिक यथार्थवादी सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों को राष्ट्र के नैतिक मूल्यों से अलग मानता है। किसी सार्वभौम नैतिक कानून का पालन प्रत्येक देश के लिए अवश्य ही लाभदायक होगा, यह सही

Scanned with CamScanner

नहीं है। यह भी सम्भव है कि वह उस राष्ट्र के लिए गम्भीर परिणाम उत्पन्न कर दे। नैतिक सिद्धान्तों के लिए अपने राष्ट्रीय हितों का बलिदान कर देना किसी भी व्यक्ति के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं माना जा सकता। साथ ही राजनीतिक उद्देश्यों के लिए नैतिकता को तिलांजलि देने को भी इतिहासकार उचित नहीं मानते। बचाव का उपयुक्त मार्ग यही है कि प्रत्येक देश अपने राष्ट्रीय हितों की दिशा में अग्रसर हो।

छठा सिद्धान्त
अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की स्वायत्तता –

राजनीतिक यथार्थवाद राजनीतिक क्षेत्र की स्वायत्तता को मान्यता देता है। इसमें राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करने के लिए शक्ति के प्रयोग को वही प्रमुखता दी जाती है जो अर्थशास्त्र के हित के साधन के रूप में धन को। राजनीतिक विचारों के अतिरिक्त अन्य विचारों के महत्व एवं उपयोगिता को मानते हुए भी इसमें राजनीतिक मानदण्डों को ही प्रधानता प्राप्त होती है। अतः राजनीतिक यथार्थवाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के प्रति कानूनी एवं नैतिक दृष्टिकोण अपनाने का विरोध करता है।

Khushbu Kumari
25th Aug. 2020

Scanned with CamScanner